लोकप्रियशास्त्रीयग्रन्थमाला - 9

मीमांसा के पारिभाषिक पदों का परिचय

किशोरनाथ झा

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम्)
नवदेहली

श्रीहरिः

प्रस्तावना

वासुदेवात्मके चित्ते ह्यकाराद्यक्षरक्रमात्।
ज्ञातृज्ञानज्ञेयरूपं ह्येकं चानेकमेव तत्॥

निर्विकल्पकप्रत्यक्षप्रामाण्यवाद अनुभूतिके शब्दविद्ध होनेपर उसे अप्रमाण मान कर चलता है। क्योंकि ऐसी अनुभूतिके याथार्थ्यका नियामक कोई उपपन्न नहीं होता। विकल्परहित अनुभूतिका, परन्तु, याथार्थ्य स्वयंप्रकाशरूपा होनेके कारण अनुभूतिके स्वयंप्रकाशनमें स्वतोगृहीत हो जाता माननेपर तो वह उसकी निर्विकल्पकताका अपहारक सिद्ध होगा प्रामाण्यरूप विकल्पके अवगाहनवश। और उसे अगृहीत नियामक माननेपर, वस्तुसंवेदनामें विकल्पतया विकल्पोंके अगृहीत होनेपर भी, वस्तुगर्भिततया समकालिक संवेदनवेद्य विकल्पोंको क्यों नहीं सोचा जा सकता ? पश्चाद्भावी अनुमिति आदिसे निर्धारित होता माननेपर तो स्वयं अनुभूतिकी स्वयंप्रकाशरूपता भी अनियत सिद्ध होगी। कहा जा सकता है कि तेजोरश्मि स्वयंप्रकाशरूपा होनेपर भी नयनगोचर भी तो होती हैं, एतावता उनकी स्वयंप्रकाशरूपता निरस्त तो नहीं हो जाती। ऐसा मान लेनेको, परन्तु, उद्यत हो जानेपर तो प्रत्यक्षानुभूतिका प्रामाण्य भी विकल्पबोधक शब्दोंसे विद्ध हो जानेपर भी क्यों अक्षुण्ण नहीं रह पाता ?

यह कथा, वाक्योंको केवल पदसंघातरूप प्रतीत्यसमुत्पाद और पदोंको भी केवल वर्णसंघातरूप प्रतीत्यसमुत्पाद मान कर, केवल वर्णोंको ही शुद्ध निर्विकल्पक अनुभूतिके गोचर होनेके कारण वस्तुभूत सिद्ध करनेकी विचाररीतिपर भी लागू होगा। अतः पदान्तःश्लिष्ट वर्णों और वाक्यान्तःश्लिष्ट पदों के स्वरूपभेदको भी केवल मानसिक विकल्परूप सिद्ध कर देगा। ऐसी स्थितिमें बुद्धि इन विकल्पोंका अवगाहन वर्णान्तर्गर्भित तथ्यके रूपमें करेगी या वर्णस्वरूपबाह्य मिथ्याभासके रूपमें ? स्पष्ट है कि निर्विकल्पकानुभूतिका प्रामाण्य स्वतोगृहीत होता है या परतोगृहीत

मीमांसा के पारिभाषिक पदों का वर्णानुक्रमणी

अ
अख्यातिवाद
अग्निषोमीय
अग्निष्टोम
अग्निसाध्ययाग
अग्निहोत्र
अग्न्याध्यान
अङ्गत्वबोधक प्रमाण
अङ्गभङ्गभावक्रम
अङ्गानुष्ठान
अङ्गापूर्व
अच्छावाक
अतिदेश
  ० षट्क
अतिरात्र
अत्यग्निष्टोम
अदृष्टार्थ सन्निपत्योपकारक
अधर्म
अधिकरण
  ० प्रणाली
अधिकारविधि
अध्याहार
अध्वरमीमांसा
अध्वर्यु
अनुग्राहकाकांक्षा
अनुपलब्धि
अनारभ्याधीत
अनुबन्धचतुष्टय
अनुबन्ध्य पशु
अनुमन्त्रण मन्त्र
अनुमान
अनुमार्जन कर्म
अनुमितवचनातिदेश
अनुयाज
अनुवाद
अनुषङ्ग
अनुष्ठानसादेश्य
अनैकान्तिक
अन्यथानुपपत्ति
अन्विताभिधानवाद(अन्वय बोध)
अन्वाहार्य
  ० दक्षिणा
अर्थकर्म
अपूर्व
  ० ता
  ० विधि
अपौरुषेय शब्दप्रमाण
अप्राप्तबाध
अभिक्रमण
अभिघारण
अभिचार
  ० कर्म
अभिधा
अभिधात्री श्रुति

अध्वर्यु–

यजुर्वेद का ज्ञाता, ऋत्विकों में प्रधान यज्ञ का आयोजक सञ्चालक।

अग्निहोत्र याग में अध्वर्यु गण में चार ऋत्विकों का नियोग होता है। उनका भिन्न भिन्न नामों से अभिधान किया गया है–

१. अध्वर्यु, २. प्रतिप्रस्थाता, ३. नेष्टा और ४. उन्नेता। इनमें क्रमशः उत्तरोत्तर में कर्तव्य (कर्म) की न्यूनता के कारण दक्षिणा में भी न्यूनता का विधान है।

अनारभ्याधीत–

कहीं अन्य प्रसंग में कहा गया मन्त्र या विधि का अन्यत्र उपयोग में लाना।

२५. अनुग्राहकाकांक्षा–

इतिकर्तव्यताकांक्षा का पर्याय

२६. अनुपलब्धि–

लौकिक प्रमाण का प्रभेद, जिसे भाट्ट मीमांसक सम्प्रदाय मानता है। प्रत्यक्ष आदि पाँच प्रमाणों की प्रवृत्ति जिस विषय में संभव नहीं है उस विषय में प्रवृत्त होने वाला प्रमाण ही अनुपलब्धि है। प्रत्यक्ष के योग्य विषय (प्रमेय) की अनुपलब्धि का ज्ञान प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से संभव नहीं है, अतः इस अनुपलब्धि प्रमाण को मानना आवश्यक है।

किसी के पूछने पर कि इस घर में लाल आँख वाला श्यामवर्ण के व्यक्ति को आपने देखा है तो इसके उत्तर में गृहस्थित व्यक्ति 'नहीं' कह देता है। इसके लिए न तो इन्द्रिय के व्यापार की अपेक्षा होती है और न तो संस्कारजन्य स्मरण ही होता है। प्रत्यक्ष के अभाव में अनुमान आदि प्रमाण की अपेक्षित सामग्री इसके लिए संघटित ही नहीं हो सकती।

प्राभाकर संप्रदाय चूंकि अभावात्मक प्रमेय नहीं मानता है। इस मत में अभाव अधिकरण स्वरूप होता है। अतः अनुपलब्धि प्रमाण मान्य नहीं है।

अनुबन्ध-चतुष्टय–

किसी भी ग्रन्थ के रचना के समय अनुबन्ध चतुष्टय का ध्यान

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम्)
नवदेहली